दैनिक नवज्योति

NAVAJYOTI ESTD : 1936

The Oldest Hindi Daily With Largest Circulation In Rajasthan

पुर, अजमेर, कोटा से एक साथ प्रकाशित • वर्ष 65, अंक 104 नगर संस्करण • जयपुर, मंगलवार, 17 अप्रैल, 2001 संस्थापक: स्व. कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी प्रभात • मूल्य 1.80 रुपए विमान शुल्क: पाँच पैसे

कैंसर के इलाज में जयपुर के वैद्य का तहलका

विशेष संवाददाता

जयपुर, 16 अप्रैल। जयपुर के वैद्य नंदलाल तिवारी द्वारा खोजी गई दवा ने कैंसर के इलाज की दुनिया में तहलका मचा दिया है। तिवारी की खोजनात्मक कैंसर के उपचार में मिली चमत्कारिक सफलता का डंका विदेशों में भी बजने लगा है। भारत के अलावा अमेरिका, जापान, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, अफ्रीका, दुबई, बहरीन, सिंगापुर, केन्या, पाकिस्तान, बेल्जियम आदि कई देशों के कैंसर रोगी तिवारी से उपचार कराने के बाद स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। विदेशों की प्रतिष्ठित प्रयोगशालाओं ने इन रोगियों के कैंसर से मुक्त हो जाने की पुष्टि की है। सुखद आश्चर्य की बात यह है कि इनमें से अधिकतर रोगी अंतिम अवस्था (लास्ट स्टेज) के कैंसर से पीड़ित थे।

तिवारी को मिली इस अपूर्व सफलता को देखकर विकसित देशों के प्रतिष्ठित चिकित्सालय भी उन्हें मरीज भेजने लगे हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में बने विश्व के प्रथम कैंसर चिकित्सालय दी रॉयल मर्सडेन हॉस्पिटल, लंदन तथा सरे (ब्रिटेन) ने श्री तिवारी की सेवाओं का लाभ उठाने की पहल की। दुनिया के इस नामी कैंसर अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. सी.एल. हामर तथा रजिस्ट्रार रिचर्ड बर्टन ने लीवर कैंसर की रोगी सोफिया को उपचार के लिए तिवारी के पास भेजा। इस रोगी को अप्रत्याशित लाभ होने के बाद क्लीवलैण्ड (अमेरिका) के विश्व प्रसिद्ध चिकित्सालय दी क्लीव्स क्लिफ मेडिकल प्रैक्टिस के विशेषज्ञ डॉ. टी.ओ. केलोगन तथा डॉ. डी. लोच ने लंदन से रक्त कैंसर के इलाज के लिए उनके द्वार पहुंचे नाजिर हुसैन को कारगर उपचार के लिए तिवारी के पास भेजा। इसके पश्चात कैलीफोर्निया (अमेरिका) के मशहूर चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल ने कैंसर पीड़ितों के (शेष पृष्ठ 8 पर)

फोन करने वालों का तांता लगा

नवज्योति ने पिछले दिनों एक विशेष रिपोर्ट छापकर अपने पाठकों को जयपुर के वैद्य नंदलाल तिवारी द्वारा अपनी देसी दवा से कैंसर के उपचार में प्राप्त की गई आश्चर्यजनक सफलता की जानकारी दी थी। उसके बाद नवज्योति के विभिन्न कार्यालयों में देश-प्रदेश से हजारों फोन व पत्र आए। ये फोन व पत्र उन लोगों के थे जो स्वयं या जिनके परिजन कैंसर से पीड़ित थे। ये पाठक तिवारी के पते व फोन नंबर के अलावा उनके बारे में और जानना चाहते थे। वे किसी भी तरह से कैंसर की गंभीर चिंता, पीड़ा एवं व्याधि से मुक्ति चाहते थे। ऐसे पाठकों की चिंता व पीड़ा में नवज्योति भी सहयोगी है। उनकी जिज्ञासा एवं पीड़ा शीघ्र शांत हो तथा सभी कैंसर पीड़ित जल्द से जल्द पूर्ण स्वस्थ हों इस उद्देश्य से हम वैद्य तिवारी के उपचार के बारे में और जानकारी प्रकाशित कर रहे हैं।

कैंसर के इलाज ने दुनिया में तहलका मचाया

(शेष पृष्ठ 1 कॉलम 8 का)

उपचार में तिवारी की सेवाओं का लाभ लिया। इस क्रम में लंदन का वह नामी-गिरामी सेंट थॉमस हॉस्पिटल भी पीछे नहीं रहा, जिससे एफ.आर.सी.एस. की चिकित्सकीय डिग्री लेना भारत समेत अनेक देशों के चिकित्सा विशेषज्ञों के लिए बड़ी बात मानी जाती है। इस थॉमस हॉस्पिटल के विख्यात विशेषज्ञ डॉ. हॉवर्ड की ओर से हॉस्पिटल के रजिस्ट्रार निकलोसेफ ने अपने यहां भर्ती कैंसर रोगी के उपचार के लिए श्री तिवारी को पत्र लिखा। अमेरिका के रक्त कैंसर से पीड़ित के. गोविन्दराव के यहां आकर श्री तिवारी से दवा ले जाने तथा उससे लाभान्वित होने के बाद कैलीफोर्निया के मनजीतसिंह ने भी श्री तिवारी से उनकी बनाई आयुर्वेदिक औषधि 'कर्कटोल' लेकर रक्त कैंसर से निजात पाई। तिवारी के उपचार से कैंसरमुक्त हुए देश-विदेश के ऐसे कई रोगियों से साक्षात्कार कर ब्रिटेन की मसुबेन अमलाथी ने इस करिश्माई कामयाबी पर एक वृत्त चित्र (डॉक्यूमेंटरी) बनाया है। इस वीडियो फिल्म में कैंसर जैसे असाध्य माने जाने वाले रोग से ग्रस्त स्त्री-पुरुषों की रोग मुक्ति की सत्य कथाएं देख-सुन कर महसूस होता है कि श्री तिवारी ने 'विचित्र किन्तु सत्य' के अंदाज में असंभव को संभव कर दिखाया है। इस सत्य से साक्षात्कार किए बिना तथा मृत्युशैया से उठकर चंगे हुए रोगियों से मिले बगैर सहसा विश्वास नहीं होता कि कैंसर जैसे इस प्राणघातक रोग पर पूर्णतः विजय प्राप्त करने के लिए कारगर दवा की खोज पर पूरी दुनिया में अरबों रुपए खर्च किए जा रहे हैं और फिर भी पूरी सफलता नहीं मिल रही है, उस पर काबू पाने में श्री तिवारी अकेले अपने बूते कामयाब हो चुके हैं। 2/13, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (फोन: 0141-521224, 521385) में रह रहे वयोवृद्ध वैद्य नंदलाल तिवारी की इस असाधारण सफलता का ही कमाल है कि उन्हें एक लाख रुपए तक के एक्जीक्यूटिव क्लास के हवाई टिकट भेजकर कई देशों में कैंसर पीड़ित अपने ईलाज के लिए बुला रहे हैं। लगभग 25 वर्षों की अनवरत साधना के बाद तिवारी ने प्राचीन ग्रंथों व भारत सरकार द्वारा आयुर्वेदिक औषधि के रूप में मान्य 8 वनस्पतियों का शुद्ध मिश्रण तैयार कर उसे 'कर्कटोल' नाम दिया है। कैंसर की इस महाऔषधि को देश के प्रसिद्ध शीर्षस्थ ऐलोपैथिक चिकित्सा संस्थान अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली के भैषज विज्ञान (फार्माकोलाजी) विभाग ने भी परीक्षण के बाद पूर्ण रूप से सुरक्षित व निरापद घोषित किया है। इस जांच रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए 'एम्स' के पूर्व अपर प्राचार्य डॉ. जगन्नाथ शर्मा (एमडी) इस औषधि से कैंसर पीड़ितों को लाभ मिलने की पुष्टि कर चुके हैं। यही नहीं, लंदन की प्रतिष्ठित लाइन मार्टिन एंड रैड फोर्ड लैबोरेटरी ने भी श्री तिवारी द्वारा जड़ी-बूटियों से तैयार किए गए इस अद्भूत आयुर्वेदिक यौगिक का परीक्षण कर इसे निर्दोष सिद्ध किया है। इंग्लैण्ड की इस नामी प्रयोगशाला के प्रमुख दवा विश्लेषक केरोल आर. ब्यायनेट ने 'कर्कटोल' का बारीकी से विश्लेषण करने के बाद इसे संतोषप्रद तथा माननीय उपभोग के लिए सुरक्षित करार दिया है। यह दवा कैंसर की बहु प्रचलित दवाओं, रेडियोथैरेपी, कीमोथैरेपी की तरह रोगी के शरीर पर जहरीला दुष्प्रभाव नहीं डालती। देश-विदेश के कई ऐलोपैथिक चिकित्सक भी इस दवा से अपने कैंसर पीड़ित परिजनों का उपचार करा चुके हैं।